आपातकाल में सृजन फुलवारी

ऋतु कोचर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

ऋतु कोचर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-103-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, **ऋतु कोचर**

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RITU KOCHAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	दोस्ती	6
2.	कहाँ पर थे देखो कहाँ आ गए हम	7
3.	आदरणीय मोदीजी	8
4.	क्यों घर से निकलना	9
5.	बेटियां	10
6.	इच्छाएं थमी हुई है	11
7.	वक्त है वक्त पर	12
8.	काश प्रेम का भी संक्रमण होता	13
9.	ये समय है आत्मचिंतन का	14
10.	तुम्हारा साथ हमारा संबल	15
11.	चेहरे पढ़ लेती हूं मैं	16
12.	समय कैसे गुजारें	17
13.	मन की बात	18
14.	नारी	19
15.	जरूरतमंद का ध्यान रखें	20
16.	उपहार	21

दोस्ती

मिलते ही खुशी देती है,
ये दोस्ती भी अजीब होती है,
चाहे रिश्ते कितने ही बन जाएं,
यारी दिल के करीब होती है,

उम्र हो चाहे कोई भी दोस्ती की,
जिंदगी उनकी खुशनसीब होती है,
काम आते है दोस्त रहनुमा बनकर,
दोस्ती ही तो हबीब होती है,

ना जात देखती है ना रुतबा,
न वो अमीर गरीब होती है,
बड़ा सुकून देती है ये दोस्ती,
स्वाद मे भी लजीज़ होती है।

कहाँ पर थे देखो कहाँ आ गए हम

कहाँ पर थे देखो कहाँ आ गए हम,
एक अनहोनी होनी से टकरा गए हम,

घूमते थे बड़े गर्व से रास्ते पर,
आज रास्ते से रस्ते पे आ गए हम,
हस्ती थी ऐसी की मिटती नहीं थी,
आज उसकी हस्ती से घबरा गए हम,

साधन हमारे सब धरे के धरे हैं,
है लाचारी कितनी कहाँ आ गए हम,
कसलो कमर की उबरना है सबसे,
करनी से अपनी पहले शरमा गए हम,

मिला है ये मौका चलो सोचने का,
अपनो के थोड़े करीब आ गए हम,
दिखाना है करके सफल देश बंदी,
लगेगा की देश के काम आ गए हम।

आदरणीय मोदीजी

गजब का व्यक्तित्व गजब का जिगर है,
मोदी जैसा प्रधान सेवक देखा किधर है,
गम्भीर जीवन उसका कलेजा बड़ा है,
है डरता नही वो तो जिद पे अड़ा है,

दिया देश हमने हाथ मजबूत है वो,
कहता वही है कर सकता है जो वो,
निर्णय है कड़वे पर लेने का दम है,
जानते है तुमको तेरे साथ हम हैं,

विरुद्ध जो होते उनका ही गम है,
है देश उनका क्या उनको शरम है,
भारत है गुरु यदि सब उसका करम है,
माना की आज अपनी हालत नरम है,

दिखाया उजाला उम्मीद की किरण है,
लायेगा वो ही आनेवाले अच्छे दिन है,
करता है डटकर सामना वो सबका,
हो पुंजिपति या हो कोई गरीब तबका,

देखा नहीं हमने कभी ऐसा नेता,
है करके दिखता नहीं सिर्फ तसल्ली देता,
आई है जो विपत्ति भी टल जायेगी,
ध्वजा विजय की जरूर लहरायेगी।

क्यों घर से निकलना

बेवजह हमें क्यों घर से निकलना,
बैठा है बाहर जब दुश्मन अनजाना,

महामारी से अपना जीवन बचाना,
रहे सलामत सबका कीमती खजाना,

नियम है कुछ जो सभी को अपनाना,
लोगों से है जरूरी आपसी दूरी बनाना,

सफाई रखकर कोरोना को भगाना,
मोदीजी ने लिया है निर्णय सयाना,

कर्मयोध्दा भी लोहा ले रहे रोजाना,
नमन इनको करता है सारा ज़माना,

उनके इस त्याग को सफल है बनाना,
काम नहीं मुश्किल गर सबने है ठाना,

डरना नही है हिम्मत से लक्ष्य को पाना,
बच्चे है देश के अब देशभक्ति दिखाना।

बेटियां

बड़ी नाज़ुक बड़ी खूबसूरत बहुत चंचल होती है बेटियां,
आंगन की मुस्कान मात पिता का मान होती है बेटियां,

बेटे को हम कहें शरीर है तो आत्मा होती है बेटियां,
माँ की मदद और पिता के काँधे का भार ढोती है बेटियां,

बेटा तो सिर्फ करता है एक ही परिवार को रौशन,
दो दो परिवार के लिए उजाला होती है बेटियां,

कौन कहता है की पालता है बेटा माँ बाप को सदा,
प्यार और अपनेपन से इन्हें सहेजति है बेटियां,

आंच नहीं आने देती परिवार की इज़्ज़त पर,
चाहे खुद कितना भी दर्द सह लेती है ये बेटियां,

घर को संभालती रिश्तों को लेकर के चलती,
हर मुकाम पर मेहनत से पहुँच जाती है बेटियां,

प्रकृति की नियामत है जो इनको बक्शी गयी,
स्वयं से एक जान को भी जन्म देती है बेटियां।

इच्छाएं थमी हुई है

कोरोना के चलते
न घूमने की इच्छा
न खरीदी का मोह,
न सिनेमा का चाव,
न नये कपड़ों की चाहत,
न गहनों से कोई वास्ता,
न पति से कोई ख्वाहिश,
न होटल का खाना,
न कहीं आना न कहीं जाना,
न पैसे का परिग्रह,
न अच्छे दिखने की चिंता,
न कोई प्रदूषण,
न वाहनों का शोर,
न काम वाली के आने की फिकर,
सबकी ज़िंदगी थमी हुई है,
सिर्फ एक गृहिणी को छोड़कर
बस उसी की जिंदगी गतिमान है।

वक्त है वक्त पर

वक्त है वक्त पर वक्त भी बदल जायेगा,
रात के बाद उम्मीदों का सूरज निकल जायेगा,

होती हिम्मत ही साथी सदा अपनी तो,
इस विपदा से भी जीवन संभल जायेगा,

मिला मौका अपनो के करीब आने का,
शायद रिश्तों में अपनापन गरमायेगा,

होनी ऐसी नही आज तक के हुई,
हर बच्चा बड़ा घर पर मिल जायेगा,

साथ है हम सभी मिलके मैदान में,
देखकर जज़्बा ये वायरस भी घबरायेगा,

जानता नहीं क्या अपना हौसले वतन,
एक एक करके कारवां बन जायेगा,

होगा पहली दफा हमारे इतिहास में,
किसी मेहमान को भारत मार के भगायेगा।

काश प्रेम का भी संक्रमण होता

काश कोरोना की तरह प्रेम सौहाद्र का भी संक्रमण होता,
एक से दूसरे को दूसरे से तीसरे को छूने मात्र से फैलता,

तब तो इसके फैलने से डर नहीं खुशी का नजारा होता,
किसने फैलाया कहाँ से आया चिंता का विषय नहीं होता,

दुर्भावना की संभावना होती भी छू कर प्रेम मे बदलती,
घर,परिवार ,समाज, देश सभी जगह सुकून पसरा रहता,

किसी नियम कानून की आवश्यकता ही नहीं होती,
सोचकर ही अथाह आनंद की अनुभूति हो रही है,

प्रेम का संक्रमण देश को एक सूत्र मे बांधे रखता,
हिंदू, मुस्लिम,सिक्ख,ईसाई आपस मे भाईचारे से रहते,

कोई नाराज़ होता तो उसे छू कर मना लिया जाता,
वाह क्या दृश्य होता कोई दुश्मन आँख उठाकर नहीं देख पाता।

ये समय है आत्मचिंतन का

उदास न हो निराश न हो, समय मिला है लाभ उठाओ,
मौका है अंतर में रमण का, ये समय है आत्मचिंतन का,

भूल हुई तो भूल जाओ, निज भूल से ही सुधार लाओ,
समय है आध्यात्म के मनन का, ये समय है आत्म चिंतन का,

अपनों को कुछ समय दो, दूरी कम करने का प्रयास करो,
सदुपयोग करो इस क्षण का, ये समय है आत्मचिंतन का,

भौतिकता से कुछ समय मिला, घर पर मिलकर कुछ नया करो,
वक्त है अविष्कार के जनन का, ये समय है आत्म चिंतन का,

फैशन की चकाचौन्ध से दूर, चार दिवारी में सिमटी है दुनिया,
मिला है वक्त निज निर्माण का, ये समय है आत्मचिंतन का,

करो खुद से ही मुलाकात, शायद फिर ये मौका न मिले,
समय है आत्मसाक्षात्कार का, ये समय है आत्मचिंतन का।

तुम्हारा साथ हमारा संबल

एक सुदृढ़ व्यक्तित्व निडर साथ बन गया,
मेरा तुम्हारा अब हमारा बन गया,
तुम्हारा साथ हमारा संबल बन गया,
एक अंजाना जो आज जान बन गया,

जिसको कभी देखा न था वो जरूरत बन गया,
तुम्हारा साथ हमारा संबल बन गया,
मेरे दिल में धड़कती धड़कन बन गया,
मेरी हर चाहत का कारण बन गया,

तुम्हारा साथ हमारा संबल बन गया,
रिश्तों में कब इतना अजीज़ वो हुआ,
मेरी हर मन्नत मेरी हर दुआ बन गया,
तुम्हारा साथ हमारा संबल बन गया,

रूठना मनाना तो होता रहा मगर,
मेरी हर खुशी का वो कारण बन गया,
तुम्हारा साथ हमारा संबल बन गया,
मेरा तुम्हारा अब हमारा बन गया।

चेहरे पढ़ लेती हूं मैं

अनुभव का ही कमाल है
कि चेहरे पढ़ लेती हूं मैं,
साल बीतते गए और इस
हुनर में महारत हासिल कर ली मैंने,
हर दुख से लड़ लेती हूं मैं,
कि चेहरे पढ़ लेती हूं मैं।

हर पल सबके चेहरे पर ध्यान रखती हूं,
उनकी खुशियाँ अपने में गढ़ लेती हूं मैं,
कि चेहरे पढ़ लेती हूं मैं,
बड़े बूढ़ों के मुख की सलवटें चिंतित कर देतीं है मुझे,
उनके चेहरे पर मुस्कान के हीरे जड़ देती हूं मैं,
की चेहरे पढ़ लेती हूं मैं।

बच्चों के उम्र का दौर, अनेक बोझ सर पर लिए,
उनके कहने से पहले समझ लेती हूं मैं,
कि चेहरे पढ़ लेती हूं मैं,
हमसफर की ढेर सारी परेशानियाँ
हंसकर प्यार से गायब कर देती हूं मैं,
कि चेहरे पढ़ लेती हूं मैं।

समय कैसे गुजारे

बोर हो रहे बच्चे सारे, समय है ज्यादा कैसे गुजारे,
न खरीदी न सिनेमा जाना, याद आये होटल का खाना,
दोस्तों की भी याद है आती, बंद है सबका आना जाना,
कैसे घर से बाहर निकले, समझ आये न कोई बहाना,

गलियों मे भी घूमे हमको लगता जैसे हो गया जमाना,
जहाँ भी देखो वहाँ यही तो कोहराम मचा रहा कोरोना,
देखो कबसे याद कर रहे हमको तो नानी और नाना,
शायद इन छुट्टीयों में हो पायेगा न हमारा आना,

पर अच्छा लगा है हमको परिवार संग समय बिताना, खेल खेलते ताश,
कौड़ी, कैरम में गोटियां घुमाना,
थोड़े दिन की बात है सहलो आयेगा वह समय पुराना,
नियम यदि सब मान गए तो निश्चित अच्छे दिनों का आना।

मन की बात

ज़ाहिर सबके जज़्बात होने चाहिए,
रिश्तों में साफ मन की बात होना चाहिए,

रखे जो दिल में तो दूरियाँ आ जाती है,
बात हो छोटी पर तूल बड़ा पा जाती है,

खुद के गम का खुद ही हिस्सेदार होता है,
टूटते रिश्ते का वो ही जिम्मेदार होता है,

कह देने भर से दिल साफ हो जाता है,
सब भूल,कहा सुना माफ हो जाता है,

अपने है अपनों को तो बस प्यार चाहिए,
साफ दिल के साथ इश्क का इज़हार चाहिए,

प्यार भरा सबका यूँ ही साथ होना चाहिए,
रिश्तों में साफ मन की बात होना चाहिए।

नारी

महानुभाव जो कहते थे अक्सर, घर पर दिन भर क्या करती नारी,
समझ आ गया उनको भी अब, कि एक नारी सब पर है भारी,

किरदार अनेक निभाती है ये, बावर्ची, कपड़ा बर्तन वाली,
देखा तो जाना अब सबने, रहती है क्या कभी ये खाली,

मुश्किल के इस क्षण में भी, सबका ध्यान ये रखती है,
लापरवाह घूमते सब है, सबको वही निरखती है,

किसने नहीं हाथ है धोया, मास्क लगाया क्या मुँह पर,
बाहर कोई जाने न पाए, संक्रमण न आये घर पर,

ए टी एम में तुम मत जाओ, कितनों ने उसे छुआ होगा,
अंदर से दे देती हूँ पैसा, कोई नहीं दिक्कत भुगतेगा,

एक एक करके जमा है करती, मुश्किल मे काम आती है,
जोड़ना उसका पता न चलता, सब कुछ कैसे वो बचाती है,

माँ बहन बेटी और पत्नी, ये पंक्ति है उनके नाम,
धन्य है उनका प्रेम और संयम, धरा करती है उन्हें प्रणाम।

जरूरतमंद का ध्यान रखें

आपातकाल से मुश्किल क्षण में
जरूरतमंदों का ध्यान रखें,
जिसकी जितनी क्षमता है वो
उतना भोजन दान करें,

देश बंद में बंद दुकानें
दुखी है कमाकर खाने वाले,
पकवान खाते आप सभी तो
उनको रोटी के भी लाले,

कुछ दिन की है बात समझलो
किसी गरीब को तुम भी पालो,
काम पर जो न आ पाए तो
रोज़ी देकरके उन्हे संभालो,

दुआ लगेगी उनकी शायद
जल्द विपदा मानेगी हार,
तृप्त हृदय तो सदा सदा ही
बिखराता है जग में प्यार।

उपहार

संसार की हर माँ को वंदन
देती है बच्चों को असीम प्यार,
अपनी जान पर खेलकर माँ
तु देती है जिंदगी का उपहार

कष्ट सहना तो तेरी नियति है
पर धन्य है तू मैं मानू तेरा आभार,
तुझसे ही तो मेरा वर्चस्व है
तु ही मेरे होने का है आधार

नजराने कई दे डाले तूने मुझे
पर हर गम करती हँसके स्वीकार,
सबका ध्यान कैसे रख लेती है माँ
रूठने पर कर लेती है मनुहार,

कितना भी टोक दो गुस्सा करो
चिंता करके जताती है अधिकार,
पर कभी अपने लिए नही जीती
अपनो के लिए करती है सब कुछ निसार,
माँ तेरा उपकार, तेरा उपकार, तेरा उपकार

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

ऋतु कोचर

कटंगी (म.प्र.)

Email- Ritukochar320@gmail.com

Mobile - 8770573730

बचपन से ही कुछ नया करने की शौकीन मैं छोटेपन मे ही अपनी आत्मकथा लिखने लगी भाई बहनों ने मजाक उडाया और मेरा लिखना थम गया, फिर काफी सालों के बाद भजन बनाना शुरू किया और बनाती चली गई।

प्रीति जो मेरी देवरानी कम दोस्त ज्यादा थी। मुझे लिखने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती, पर मैंने ध्यान देने में देर कर दी, खैर देर आये दुरुस्त आये, आखिर लिखना शुरू किया, लिखते लिखते कब मै अंतरा का हिस्सा बन गई पता ही नहीं चला।

आपातकाल का ये समय जो वाकई में मुश्किल का समय है इसने तो मेरे लेखन को नई दिशा दी। उसपर अंतरा का मंच और प्रीति सा मार्गदर्शक भी फिर क्या था कलम गतिमान हुई नित्य प्रति नये विषय मेरे मन में विचारों का ज्वालामुखी सा उठता और एक नई रचना जन्म ले लेती, इस विश्व संकट में हम सब देश और कानून व्यवस्था के साथ है हमारी सभी रचनाएँ इन्ही भावों से ओतप्रोत हैं।

धन्यवाद प्रीति को जिसने मुझे मुझमें छिपे लेखक के दीदार कराये और इस अंतरा मंच को भी आभार जिसने मुझे अपने परिवार के सदस्य के काबिल समझा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-103-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/